'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ८९ | वाराणसी, शनिवार, ८ अगस्त, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

पट्टण (कश्मीर) २२-७-'५९

मैं नये जमाने का पैगाम लाया हूँ

अवाम (जनता) अपढ़ है, लेकिन अक्लवाला है। थर्मामीटर जैसे बराबर हरारत को नापता है, वैसे ही अपढ़ लोग भी नापते हैं कि कौन सच्चे खिदमतगार हैं ? ये ठीक नापते हैं। इनको कोई ठग नहीं सकता। क्योंकि हिन्दुस्तान में करीम जमाने से सन्त पुरुष इनकी खिदमत करते आये हैं।

जम्मू-कश्मीर स्टेट में हमने प्रवेश किया, तब हमें एक किताब भेंट दी गयी थी—"लल्ला वाक्यानी" (अंग्रेजी तर्जुमा)। लल्ला (कश्मीर की सन्त स्त्री) छह सौ साल पहले हुई। लेकिन आज भी जनता उसे भूली नहीं है। इस बीच कितने बादशाह आये और गये, पर लोगों ने किसे याद रखा ? इसीलिए जम्मू-कश्मीर स्टेट में कदम रखते ही मैंने कहा था कि कश्मीर का, हिन्दुस्तान का और दुनिया का मसला रूहानियत से हल होगा, सियासत से नहीं।

ग्रामदान से कुनबा बनेगा

'जमीन बँट के रहेगी' यह नारा लगता है, लेकिन जब कोई जमीन दान नहीं देगा तो ऐसे नारे बुलन्द करने से क्या होगा ? जब तक जमीन की मालकियत रहेगी, तब तक कशमकश, जद्दोजहद जारी रहेगी। इसलिए सिर्फ जमीन ही नहीं, भगवान ने जो कुछ दिया है, वह बाँटना होगा। 'जकात' देना होगा। लोग कहेंगे कि इसमें जरा तकलीफ होती है। लेकिन जरा दूर निगाह से देखो तो कोई तकलीफ नहीं है। दूसरे को दिल खोलकर दोगे भी तो कितने हाथों से ? दो से। उसके बदले में हजारों हाथों से पाओगे। यह सौदा घाटे का नहीं, मुनाफे का है। खेत में एक सेर बीज बोया तो कितना लौटा ? (जवाब मिला—डेढ़ मन) यह है अल्ला की कुदरत ! वह बनिया नहीं है। वह बेहिसाब देता है। एक बीज बोओ, सौ पाओ। यह खैरात, जकात और दान बोने की बात है। ग्रामदान से सारा गाँव एक बनेगा, कुनबा बनेगा। सबको समाज का प्यार मिले, इसलिए मेरे भाइयो, दिल खोलकर दो।

देने से रूहानी तसल्ली होगी

कल अगर कोई हमारे पास पानी माँगने के लिए आये तो उसे पानी देना हम अपना फर्ज समझते हैं। अगर हम उसे पानी न दे सकें तो शर्मिन्दा हो जाते हैं। हम प्यासे को पानी पिलाते हैं तो उसे जितनी तसल्ली पहुँचती है, उससे ज्यादा हमें पहुँचती है। प्यासे को तो पानी पीने से जिस्मानी तसल्ली होती है, लेकिन पिलानेवाले को रूहानी तसल्ली होती है, जिसकी कीमत ज्यादा है। यह इसीलिए होता है कि हम महसूस करते हैं कि भगवान ने पानी सबके लिए पैदा किया है। वह हमारे घर में है, तब भी हम उसके मालिक नहीं हैं। यही बात हवा की भी है। इस तरह जैसे हवा और पानी भगवान की पैदा की हुई वस्तु है, वैसे ही जमीन भी भगवान की पैदा की हुई चीज है।

जमीन जैसी चीज पर, जो कि हर इन्सान के हर काम के लिए जरूरी है, हम मालकियत बनायें तो सुखी कैसे हो सकते हैं ? अंग्रेज कहते थे कि हम हिन्दुस्तान के मालिक हैं, लेकिन उन्हें वह मालकियत छोड़नी ही पड़ी। राजा-महाराजाओं को भी मालकियत छोड़नी पड़ी। इस तरह आप देख रहे हैं कि दरिया का बहाव किधर है। यह सारा जबरदस्ती से हो, इससे बेहतर है कि वह प्यार से हो। हर कोई छठा हिस्सा दे, यह इसकी इफ्तेदाह (आरंभ) है।

हम पानी के बूँद से बनें

गेहूँ के ढेर में से मुट्ठीभर गेहूँ निकाल लें तो उस नाप का गड्ढा उस ढेर में पड़ता है और वह भरता नहीं है। लेकिन पानी में से थोड़ा पानी निकाल लें तो उसमें जो गड्ढा होता है, वह फौरन भर जाता है। पानी की बूँदें एक-दूसरे पर प्यार करती हैं—जहाँ गड्ढा हो जाता है, वहाँ दौड़ जाती हैं, गड्ढा पैदा ही नहीं होने देतीं। गेहूँ के दाने बेवकूफ होते हैं। थोड़े महात्मा दाने गड्ढा भरने के लिए जाते अवश्य हैं, पर अन्दर गिर जाते हैं। आज हमारा समाज गेहूँ के ढेर जैसा बना है, किन्तु वह पानी जैसा बनना चाहिए।

मैं तो पैगाम पहुँचानेवाला हूँ। कुरान शरीफ में कहा है—"अलैकल बलगुल मुबीन" अल्ला पैगम्बर को कह रहा है—तेरे पर सिर्फ पैगाम पहुँचाने की जिम्मेवारी है। वह पैगाम पहुँचाने का काम हमने किया। ये कुछ चन्द बातें जो हमने बतायीं, नये जमाने का पैगाम है। मैं यही पैगाम लेकर कश्मीर की खिदमत में आया हूँ।

[गतांक से समाप्त]

प्रार्थना-प्रवचन

दिलना (कश्मीर) २३-७-'५९

खुदऔर खुदा के अलावा कोई ताकत इन्सान की भलाई नहीं कर सकती

जब हमने कश्मीर में कदम रखा तो कहा था कि हम एक मिशन लेकर आये हैं। यहाँ हम चार काम करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे, सोचेंगे और प्यार करेंगे। प्यार के लिए, विचार समझाने के लिए जितना बोलना पड़ेगा, उतना ही बोलेंगे। रोज हमें कुछ न कुछ बातें सुनने को मिलती हैं। आज कुछ भाई (कश्मीर के डेमॉक्रेटिक नॅशनल कॉन्फरेन्स के नेता) हमसे मिलने आये थे। उन्होंने दिल खोलकर बातें कीं। हम हिन्दुस्तान के बहुत सारे सूबे घूमकर आये हैं, हमारी तकरीर करोड़ों लोगों ने सुनी है और हजारों लोग—हर पार्टी के और दूसरे भी—हमसे मिले हैं। यह हमारी खुशकिस्मती है कि हमारे सामने अपना दिल खोलने में किसीको भी कोई हिचक नहीं मालूम होती। यहाँ भी जिस किसीने मेरे सामने अपनी बात रखी, खुलासे के साथ और खालिस दिल के साथ रखी।

'जन्नत' और 'जहन्नुम' आपके ही हाथ में

बड़ी खुशी की बात है कि जो मिशन लेकर हम यहाँ आये हैं, यहाँके लोग उसे जरूरी मानते हैं और समझते हैं कि वह कामयाब हुआ तो बहुत बड़ा काम होगा। आखिर कश्मीर का नसीब किसके हाथ में है? सियासतदाँ (राजनीतिज्ञ) कहते हैं कि आपका नसीब उसके या इसके हाथ में है। एक पार्टीवाले आपके पास आकर कहते हैं कि 'हमें वोट दें, हम आपको जन्नत में ले जायँगे। दूसरी पार्टी को वोट देंगे तो वे आपको जहन्नुम ले जायँगे।' दूसरी पार्टीवाले कहते हैं कि 'हमें चुनेंगे तो हम आपको जन्नत में ले जायँगे और दूसरों को वोट देंगे तो वे जहन्नुम में ले जायँगे।' कोई यह नहीं कहता कि आपका 'जन्नत' और 'जहन्नुम' आपके ही हाथ में है, दूसरे किसीके हाथ में नहीं है।

> कहा जाता है कि कश्मीर का फैसला यहाँके बड़े लोग करेंगे। कश्मीर के मसले का हल देहली में हो या दुनिया में और कहीं। लेकिन आप यह समझ लीजिये कि अगर अपनी जिन्दगी किसीके हाथ में है तो खुद के और खुदा के हाथ में है। खुद और खुदा इन दो के सिवाय तीसरे किसीका उसमें दखल नहीं है।

दो नुक्तों का योग

पहली बात यह है कि हम अपने हाथ-पाँव और दिल-दिमाग पर भरोसा करें; नेक काम करें तथा एक होकर काम करें। हम ऐसा करते हैं तो हमारा नसीब एक हद तक हमारे हाथ में रहता है। उस हद के बाद वह और किसीके हाथ में है तो खुदा के, दूसरे किसीके हाथ में नहीं। खुद और खुदा ये दो नुक्ते मजबूत बनाओ। दोनों को जोड़नेवाली जो लकीर होगी, वही हमारा रास्ता, सबील होगी। लकीर दो नुक्तों से बनती है। एक नुक्ता है वह, जहाँ हम इस समय हैं और दूसरा है वह, जहाँ हमें जाना है। उन दोनों को जोड़ने से हमारे लिए रास्ता बन जाता है। पहला नुक्ता हम खुद हैं, जहाँ हम काम करते हैं और दूसरा नुक्ता खुदा है, जहाँ अभी हमें पहुँचना है।

'खुद' का मानी क्या?

'खुद' का मानी क्या है, ठीक से समझ लीजिये। 'खुद' के मानी मैं अकेला, इस जिस्म में रहनेवाला छोटा-सा जीव नहीं, बल्कि 'खुद' याने हमारा गाँव। हम एक गाँव में इकट्ठा रहते हैं और हमारे कई छोटे देहात करीब जमाने से बने हैं। तवारीख में देहली, काशी जैसे ५-७ शहर हैं, जिनके नाम हम पुराने जमाने से सुनते आये हैं। लेकिन हम आपसे कहना चाहते हैं कि वे शहर उतने पुराने नहीं, जितने पुराने ये छोटे-छोटे गाँव हैं। अभी मैं आपके सामने 'खुद' की तफसिर बयान कर रहा हूँ। 'खुद' याने मैं अकेला, मेरा जिस्म या मेरा छोटा-सा कुनबा नहीं। हम जिस गाँव में रहते हैं, वह सारा गाँव मिलकर 'खुद' है। हमें अपनी मिली-जुली ताकत बनानी है।

मालकियत का बोझ पटक दें

मैं बार-बार कहता हूँ कि आपके बीच एक ऐसी चीज पैठ गयी है, जो आपको तोड़ती है, आपके दिलों को, आपकी जिंदगी को तोड़ती है। वह चीज है—मालकियत। इस मालकियत के बोझ को पटक दें तो आप देखेंगे कि आपकी जिंदगी आसान बनेगी और आपकी ताकत बढ़ेगी। हमने आज मालकियत का बड़ा भारी बोझ अपने सिर पर उठा रखा है। यहाँकी सरकार ने बाईस एकड़ का सीलिंग बनाया है तो हम समझते हैं कि अब हम उतनी जमीन के कानूनी मालिक बन गये हैं। मगर ऐसी मालकियत को क्या चाटना है? क्या अंग्रेजों के पास कानूनी हक नहीं था? वे हिंदुस्तान पर हुकूमत चलाते थे। कहा जाता था कि उनका राज्य दुनियाभर में फैला है, जिसमें सूरज कभी नहीं डूबता। लेकिन आखिर हमने देखा कि उनके राज्य में भी सूरज डूबा और उन्हें यहाँसे बोरियाबिस्तर बाँधकर जाना पड़ा। अंग्रेजों की बहुत बड़ी ताकत थी। उन्होंने जंग में जर्मनी को भी हराया था। लेकिन यहाँ उनके कदम नहीं टिक सके, क्योंकि वे बहाव के खिलाफ काम करते थे। बहाव के खिलाफ कोई नहीं टिक सकता। राजा-महाराजा भी नहीं टिके। इसलिए आप समझ लीजिये कि जमाने का बहाव किस तरफ है? यह भी समझ लीजिये कि हम मालकियत का दावा करेंगे तो मार खायेंगे और हार खायेंगे। उससे गाँव के दिल और दिमाग के टुकड़े पड़ जायँगे, गाँव की ताकत टूट जायगी।

मान लीजिये, मेरी ताकत चार सेर और आपकी तीन सेर है। अगर हमारी ताकतें मिलती हैं तो सात सेर बनती हैं। लेकिन ताकतें टकराती हैं तो नतीजा यह होता है कि मेरी नाम की जीत होती है, लेकिन दुनिया को सिर्फ एक सेर ताकत का ही फायदा मिलता है। मेरे दो हाथ और आपके दो हाथ मिल जाते हैं तो चार बनते हैं। लेकिन एक-दूसरे के खिलाफ जाते हैं तो आप मेरे हाथों को काटते हैं, मैं आपके हाथों को काटता हूँ और [२-२=०] 'साइफर', शून्य बच जाता है। अभी अपने समाज में दूसरा हिसाब चल रहा है, ताकतें टकराती हैं और साइफर बनता है।

हम जमीन के 'खादिम' हैं

जो सियासतदाँ हैं, उनका नजरिया तंग रहता है। उनका दिमाग वसी नहीं होता, इसलिए वे पार्टियाँ बनाते हैं। हमलोगों में पहले ही तफरके या भेद कम नहीं हैं। उसमें उन्होंने और एक 'पार्टी'वाला भेद पैदा किया है। वे इन्सानियत पैदा नहीं होने देते। पार्टी के नाम पर वे गाँव-गाँव के लोगों को बहकाते हैं।

होना तो यह चाहिए कि हम गाँववालों को समझा दें कि हवा, पानी और सूरज की रोशनी की तरह जमीन भी अल्ला की पैदा की हुई चीज है। जमीन की मालकियत नहीं हो सकती। हम जमीन को छोड़कर चले जाते हैं और जमीन यहीं पड़ी रहती है। आश्चर्य की बात है कि फिर भी हम उसके मालिक बन गये हैं।

मैं कहना चाहता हूँ कि हम जमीन के मालिक बनते हैं तो उसका मतलब यह हुआ कि हम अल्ला के साथ 'शिरकत' करते हैं। इसे मैं 'कुफ्र' समझता हूँ। समझना चाहिए कि 'मालिक' अल्ला ही हो सकता है, हम नहीं। हम तो जमीन के 'खादिम' ही हो सकते हैं। इसलिए गाँव-गाँव में लोग जमीन की मालकियत मिटायें, बाँटकर खायें, मिल-जुलकर काम करें और यह समझें कि जमीन 'मेरी' नहीं 'हमारी' है, गाँव की है। याद रखिये कि हम 'खुद' याने हमारा गाँव। हम खुद और खुदा, इन दो के सिवाय तीसरी बात बीच में मत आने दीजिये।

गाँववालों के पास जाकर उनकी ताकत बनाने के बजाय ये सियासतदाँ उनकी ताकत तोड़ते हैं। जिन्होंने कभी देहातों का मुँह भी नहीं देखा, वे भी चुनाव के वक्त देहातों में जाते और कहते हैं कि 'हमें वोट दीजिये। हम यह करेंगे, वह करेंगे।' इस तरह बढ़ा-चढ़ाकर वादे करते हैं। वे कहते हैं कि 'हमें वोट देंगे तो आपको कोई फिक्र नहीं करनी पड़ेगी, आपकी तरक्की का कुल जिम्मा हम उठायेंगे।' इस तरह लोगों को बहकाया जाता है।

'इल्म' ही नहीं, 'अमल' भी चाहिए

अब गाँववालों को समझाया जाय कि आपकी तरक्की का जिम्मा आपपर ही है, बाहरवाले तथा सरकारवाले तो सिर्फ थोड़ी इमदाद दे सकते हैं। हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे तो अल्ला के बारिश बरसाने पर भी फसल नहीं, घास ही उगेगी। याने अल्ला भी फसल नहीं, घास ही पैदा कर सकता है। अल्ला की बारिश का फायदा हमें तब मिलेगा, जब हम खेत में बोयेंगे, मेहनत-मशक्कत करेंगे। अल्ला भी आलसी को मदद नहीं करता। हम बबूल बोयेंगे और अल्ला का नाम लेकर उससे कहेंगे कि हमें आम दो तो वह आम नहीं, बल्कि बबूल ही देगा। इसलिए सिर्फ अल्ला का नाम लेने से कुछ नहीं होगा। नाम के साथ काम भी करना होगा।

आज जो भाई हमसे मिले, उन्होंने कहा कि हमारी कोई खास शिकायत नहीं है। जो वादे किये गये हैं, उनपर अमल नहीं हो रहा है—यही शिकायत है। इस तरह सारा मामला अमल पर रुका हुआ है। 'इल्म' है, लेकिन 'अमल' नहीं है। चावल कैसे पकाना, इसका इल्म तो है; लेकिन अमल नहीं किया, चूल्हा नहीं सुलगाया, चावल नहीं पकाया तो क्या फायदा हुआ? उसूल जरूरी है, लेकिन उन उसूलों पर अमल भी होना चाहिए।

दौलत और गुर्बत : इम्तहान के ही लिए

कुरानशरीफ में कहा है कि अल्ला हमारी आजमाइश करता है। वह किसीको दौलत या गुर्बत देता है तो उसकी आजमाइश करने के लिए ही देता है। वह किसीको दौलत देता है तो देखता है कि क्या वह पड़ोसियों पर प्यार करता है? अगर आदमी अपनी दौलत का हिस्सा बाँटता है तो उस आजमाइश में पास होगा। और अगर दूसरों को लूटता है, चूसता है तो फेल होगा। जो फेल होगा, उसे वह आग में ले जायगा और जो पास होगा, उसे बाग में ले जायगा। लोग समझते हैं कि जिसे अल्ला ने गुर्बत दी, उसपर वह नाराज है और जिसे दौलत दी, उसपर राजी है। लेकिन यह खयाल गलत है। अल्ला किसीको गुर्बत भी देता है तो आजमाइश के लिए ही देता है। वह देखता है कि जिसे गुर्बत दी है, क्या वह चोरी करता है, झूठ बोलता है या हाथ फैलाकर भीख माँगता है? अगर वह यही सब करता है तो फेल होता है। लेकिन अगर वह दोनों हाथों से मेहनत करता है, झूठ नहीं बोलता, चोरी नहीं करता, लाचार और दब्बू नहीं बनता, हिम्मत और सब्र रखता है, अल्ला का नाम लेता है और जो भी थोड़ा-सा मिलता है, उसमें खुश रहता है—उसे दो रोटी की भूख है और एक ही हासिल हुई हो तो उसमें से भी थोड़ा-सा हिस्सा दूसरे को देता है—तो इम्तहान में पास हो जाता है। इस तरह अल्ला दौलत या गुर्बत देकर अपने बंदों की आजमाइश करता है, उन्हें कसता है। अल्ला कभी खौफ पैदा करता है, कभी भूख की तकलीफ देता है तो वह सब आजमाइश करने के लिए ही! जरा सब्र रखो! सब्र रखनेवाले को खुशखबरी सुनने को मिलती है।

दो सबक

मैं आपको खुशखबरी सुना रहा हूँ कि दो बातें याद रखिये। १. सारा गाँव मिलकर हम 'खुद' बन जायँ। हम सारी जमीन, दौलत, अक्ल गाँव की बनायें। हमारे गाँव में बेजमीन कोई न रहे। चाहे गुर्बत हो या दौलत—जो कुछ भी हो, बाँटकर खायें। २. खुदा को याद करें। बीच में किसीको दखल न देने दें। जो सियासतदाँ होते हैं, वे 'दाँ' कहलाते हैं। लेकिन वाकई में होते हैं वे 'नादाँ'। उनका दिल, दिमाग तंग होता है। वे सोचते नहीं कि विज्ञान का जमाना कितनी रफ्तार से आगे बढ़ रहा है और दुनिया में कौन सी ताकतें काम कर रही हैं! वे तंग नजरिये से ही देखते हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि हमारे मसले 'सियासत' से नहीं, 'रूहानियत' से ही हल होंगे।

कश्मीरी में 'अल्ला' और 'लल्ला'

मैं नहीं जानता कि मैं आपको कहाँ तक समझा सका। क्योंकि मैं कश्मीरी ज़बान से वाकिफ नहीं हूँ। मैं चाहता हूँ कि कश्मीर की यात्रा में कश्मीरी सीखूँ। यहाँके तालीम के मंत्री से हमने कहा है कि कृपा करके कश्मीरी किताबें नागरी और उर्दू—दोनों रस्मूलखत (लिपि) में शाया कीजिये। इससे कश्मीरी के आगे बढने में काफी मदद मिलेगी। मै चाहता हूँ कि कश्मीरी खूब बढ़े।

> लोग कहते हैं कि कश्मीरी में किताबें नहीं हैं, साहित्य नहीं है। किंतु मैं मानता हूँ, यह विचार ठीक नहीं है। जिस जबान में ४०० साल पहले 'लल्ला' हो गयी, उस जबान में क्या कमी है? 'लल्ला' है और 'अल्ला' है तो फिर तीसरा कौन 'कल्ला' चाहिए?

कश्मीरी साहित्य को आप खूब बढा सकते हैं। जहाँ इतनी खूबसूरत कुदरत है, वहाँ बड़े-बड़े शायर पैदा हो सकते हैं।

आप यह न समझें कि कश्मीरी में जान नहीं है। कश्मीरी में खूब जान है। उसने संस्कृत, फारसी, अरबी, पंजाबी वगैरह सभी भाषाओं से माल लिया है और वह मालामाल हुई है। उसके साथ-साथ उसकी अपनी भी चीजें हैं। इसलिए कश्मीरी में बहुत कुछ लिखा जा सकता है। मैं चाहता हूँ कि कश्मीरी सीखूँ। लेकिन यह मुमकिन नहीं कि मैं कश्मीरी में तकरीर करूँ। इसलिए मैं अपनी टूटी-फूटी उर्दू में बोलता हूँ। उम्मीद है कि आप आसानी से मेरी बातें समझ जायँगे। ●००

प्रार्थना-प्रवचन

वत्तरगाँव (कश्मीर) २५-७-'५९

खिदमत से ही मुल्क रोशन होगा

आज एक भाई ने हमसे कहा कि 'हमारी कुछ मुसीबतें हैं, जिन्हें दूर करने के लिए आप सरकार पर वजन डालिये।' हमने कहा कि हम पर वजन पड़े तो पड़े, लेकिन हम किसीपर वजन नहीं डालेंगे। आपकी चिट्ठी हमारे पोस्ट से जायगी ? उस भाई ने हमारी बात समझ ली। अब सोचने की बात है कि एक शख्स जिंदगी में एक दफा आपके पास आया और वह पैदल चलनेवाला है, इसलिए उसका दुबारा आना मुमकिन नहीं है। आपको सोचना चाहिए कि उससे क्या फायदा उठाना है ? आपके पास जो आग है, उसका उपयोग बीड़ी सुलगाने में करना है या और किसी काम में ? अगर आप चाहें तो आग से आपकी बीड़ी सुलग सकती है। पर इससे आग का आपने पूरा उपयोग नहीं किया, ऐसा कहा जायगा। आपकी छोटी-मोटी शिकायतें दूर हों और हमसे आपको थोड़ी बहुत सहूलियतें मिल जायँ, इतना ही हुआ तो आप हमसे क्या विशेष फायदा उठा सके ? हमारा पूरा फायदा उठाया, ऐसा तब माना जायगा, जब आप हमारा काम उठायेंगे। हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव में जमीन की मालकियत मिटे और गाँव में आजादी आये।

खिदमत, जकात और नमाज

आज जो भी अक्लवाले हैं, वे सब पार्टियों में बँटे हैं। हमें तो उसमें कोई अक्ल नहीं दीखती है। इसलिए कम-से-कम हर पार्टी में से कुछ लोग पार्टी छोड़कर खालिस गरीबों की खिदमत में लगें। "मा उमिरू इल्ला लिय अबुदुल्लाह मुखलिसीन लहुद्दीन हुन फाअ, व यु क़ीमुस् सलात व युअतुज़ ज़कात, व ज़ालीक दीनुल करयीमह।" खालिस बनकर अल्ला की इबादत करो।

हम खिदमत करेंगे तो चुनाव में जीतेंगे, ओहदे पायेंगे, ऐसी ख्वाहिश से नहीं, बल्कि 'वजुहुल्लाह' से, अल्ला का चेहरा देखने की ख्वाहिश से, हनीफ बनकर खिदमत कीजिये। 'रुक्ने-दीन' [धर्म के आधार स्तंभ] पाँच कहलाते हैं। लेकिन यहाँ पर उनमें से दो, फांका और हल छोड़ दिये गये हैं। इसका मतलब यह नहीं कि वे अकीन [खंबे] नहीं। लेकिन अवाम के लिए क्या मजहब है, यह कहने का मौका आया, तब उन दोनों को छोड़ दिया गया। क्योंकि कई लोग ऐसे हैं, जो फांका नहीं कर सकते।

क्या फांका न करनेवालों के लिए मजहब नहीं है ? इसका जवाब दिया गया है कि उनके लिए भी मजहब है। फाका न करनेवालों से कहा गया है कि आप फांका नहीं कर सकते हैं तो एक गरीब को खिलाइये। ये तीस रोजे रखने के बदले तीस गरीबों को खिलाया जाय तो उतना ही सबाब मिलेगा। इस तरह यहाँ पर सिर्फ तीन बातें बतायी हैं १. हनीफ बनकर सच्चाई से खिदमत करो, २. जकात दो, ३. नमाज पढ़ो। सबके लिए यही दीन है।

मैं एक भोला आदमी हूँ, आलिम नहीं हूँ। मैं मानता हूँ कि यहाँ जो सैलाब आया, उसके पीछे हमारे बुरे कारनामें हैं। अगर बुरे कारनामें न होते तो अल्लाह हमें कभी तकलीफ न देता। मैं इसका सुबूत पेश नहीं कर सकता, लेकिन यह मेरा ईमान है।

खिदमत का नजारा

हमें खालिस खिदमत करनी चाहिए। खिदमत भी ओहदा, इज्जत वगैरह पाने की ख्वाहिश से नहीं, बल्कि बिना किसी चाह की खिदमत होनी चाहिए।

पार्टीवाले खिदमत करते हैं, लेकिन सोचते हैं कि हमने इतनी खिदमत की तो हमें क्या मिलेगा ? इस तरह सौदे की बात चलती है। सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि दूसरी पार्टीवाला खिदमत करता है तो खुशी नहीं होती, क्योंकि इससे दूसरे की इज्जत बढ़ती है। अभी सैलाब आया है। एक पार्टी सोचती है कि लोगों को इमदाद देने के कार्य में दूसरी पार्टीवालों की मदद ली जाय तो उनकी इज्जत बढ़ेगी। उनकी मदद लिये वगैर ही हम सैलाब के बाद काम कर सकते हैं, यही बात अब हम साबित करना चाहते हैं। कितनी कमनसीबी है। इस कश्मीर में मुट्ठीभर लोग हैं, लेकिन सैलाब आया है, ऐसे वक्त भी खालिस खिदमत की तमन्ना नहीं पैदा हो रही है।

खिदमत खालिस हो

मैं चाहता हूँ कि इन पार्टियों में से कुछ लोग ऐसे निकलें, जो खालिस खिदमत करें। इस पार्टीवाला इसको एक गाली देता है और उस पार्टीवाला इसको एक गाली देता है। गाली से गाली नहीं कटती, बल्कि इससे तो लोगों के सामने एक के बदले दो-दो गालियाँ आती हैं। यह उसको निकम्मा बताता है और वह इसको निकम्मा बताता है। लोग दोनों को निकम्मा समझते हैं। वे ठीक ही समझते हैं। इसलिए मैं इस तलाश में हूँ कि कुछ सच्चे खिदमतदार निकलें, जो कुछ पाने की तमन्ना से नहीं, बल्कि हनीफ बनकर खिदमत करें। नहीं तो यह होगा कि बाबा आया तो बिजली की सी चकाचौंध और उसके बाद फिर अँधेरा ! बिजली की चमक के बाद अँधेरा आता है तो वह बहुत गहरा मालूम होता है। कुछ तो ऐसे शख्स निकलें, जो बाबा का काम आगे चला लें। लेकिन ऐसे कौन मिलेंगे ? ऐसी ख्वाहिश किसको होगी ?

कुरानशरीफ में कहा है—'मा तशाऊन इल्ला अंय् यशा-अल्ला हु ख्बुल आलमीन्।'—अरे कंबख्तो, तुम नहीं चाहोगे, जब तक अल्ला नहीं चाहेगा। जब अल्ला चाहेगा, तभी तुम चाहोगे। इसलिए मैंने अपना सारा भरोसा अल्ला पर रखा है। मुझे जो हिला रहा है, घुमा रहा है, वही आपको उठायेगा और मजबूर करेगा कि यह खिदमत करो। मेरा उसीपर भरोसा है। ◆◆

अनुक्रम

१. मैं नये जमाने का पैगाम लाया हूँ
पट्टण. २२ जुलाई '५९ पृष्ठ ५७७
२. खुद और खुदा के अलावा ....
दिलना. २३ जुलाई '५९ " ५७८
३. खिदमत से ही मुल्क रोशन होगा
वत्तरगाँव. २५ जुलाई '५९ " ५८०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी